महाशिवरात्रि=>

महाशिवरात्रि उस पावन पर्व का नाम है जब भगवान शिव शंकर ने माता पार्वती से पाणिग्रहण संस्कार करा था ! हिंदू मान्यता बताती है कि त्रिमूर्ति में ब्रह्मा श्रृष्टि की रचना करते हैं, विष्णु उसका पालन, तथा शिव उसका संघार ! मानव स्वभाव कि चर्चा न करते हूए यह बताना ही पर्याप्त होगा कि भगवान शिव के विवाह को श्रृष्टि की प्रगति और विकास के लीये लाभकारी मानते हूए श्रधालु बड़ी धूमधाम, और जोश से इस पर्व को मनाते हैं !

इस पर्व का महत्त्व इसलिए भी है कि इसमें पूजा करना अत्यंत लाभकारी माना गया है ! अविवाहित कन्या मंगलमय विवाह के लीये, विवाहित दंपत्ति संगतता समस्याओं के समाधान के लीये, तथा अन्य ईश्वर की अनुकंपा के लीये पूजा करते हैं !

कृष्ण पक्ष कि त्रियोदशी को सूर्य कुम्भ राशि में होता है तथा चंद्र मकर राशि में ! समझने कि बात यह है कि सूर्य शिव को दर्शाता है तथा चंद्र, माता पार्वती को ! कुम्भ सूर्य कि राशि सिंह से सबसे दूर है, और यहाँ पर सूर्य भौतिकवादी नहीं होता ! धन, भौतिक सुख के लीये लाभकारी नहीं है ! कुम्भ राशि को दर्शाती है, एक मट्टी का पानी रखने का बर्तन, जो कि खाली है ! तुरंत जो पहली बात मन में आती है, कि यह अत्यंत दरिद्रता का प्रतीक है ! लेकिन कुम्भ शनि कि मूल त्रिकोण राशि है इसलिए हर गृह यहाँ फल जब देता है जब कर्म करते समय, व्यक्ति अपने को कर्मफल से विमुख कर ले ! शिव को वैरागी कहा जाता है जो कि अपने पास कुछ नहीं रखते, सब दे देते हैं, उनके खुद के पास रहने के लीये खुद की कुटिया भी नहीं है !

****

अमावश्य से पूर्व चौदश कि सुबह का चंद्र का लघु अंश अंतिम चन्द्रमा होता है ! उसके पश्च्यात चंद्र अगले दो दिन नहीं दीखता है, और फिर उसका लघु अंश शुक्ल पक्ष कि दोज की शाम को कुछ समय के लीये दीखता है, जिसको देख कर मुस्लिम समुदाय का नया मास प्रारम्भ होता है ! अर्थात शिवरात्रि के अगले दिन सुबह का चंद्रमा अंतिम चंद्रमा होता है ! इसीलिये श्रधालु शिवरात्री की पूजा पूरी रात करके, अगले दिन सुबह सूर्य उदय पश्यात सूर्य के ऊपर चंद्र का लघु अंश देख कर ही पूजा समाप्त करते हैं. ज्योतिष मार्तंड डॉक्टर राजकुमार तिवारी